9

परमेश्वर ने मरियम को ही ज़्यों चुना

लूका 1 व 2, एक निकट दृष्टि

''भली स्त्री'' वाले पद में यह टिप्पणी की गई है, ''उसके पुत्र उठ-उठ कर उसको धन्य कहते हैं'' (नीतिवचन 31:28क)।

मां को विशेष दर्जा दिया गया है। एक कॉमिक में चार्ली ब्राउन ने कहा था, ''हर किसी को किसी के प्रेम की, किसी के भरोसे की, किसी की देखभाल की, किसी के समर्थन की, किसी के साथ हंसने या रोने की ज़रूरत होती है।'' लूसी ने उज़र दिया, ''इसमें तो बहुत से लोग हैं।'' फिर स्नूपी[1] ने आगे जोड़ा, ''या *एक* अद्‌भुत मां।'' उन सब में जो मुझ पर विश्वास रखते हों और मेरा समर्थन करते हों, मेरी अपनी मां और मेरी तीन लड़कियों की मां ही हैं। हम में से अधिकतर लोग उठकर अपनी मां को धन्य कह सकते हैं।

लूका 1 अध्याय में हमें किसी दूसरे की मां को धन्य कहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। आयत 42 में इलिशबा ने एक होने वाली मां से कहा था ''तू स्त्रियों में धन्य है।'' यह एक इब्रानी अभिव्यज़्ति थी, जिसका अर्थ है, ''तू स्त्रियों में सबसे धन्य है।'' आयत 48 की प्रतिक्रिया थी, ''इसलिए देखो, अब से सब युग युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे।'' न केवल उसके अपने बच्चों ने उसे धन्य कहना था, बल्कि अन्य सभी लोगों ने भी यह मानना था कि उसे परमेश्वर द्वारा आशीष दी गई थी। इस आयत में यीशु की माता मरियम की बात की गई है।

सब माताएं धन्य हैं, लेकिन मरियम विशेष कारण से धन्य थी। उस समय की सभी यहूदी स्त्रियों में से परमेश्वर ने उसे अपने पुत्र की माता होने के लिए चुना। इस तथ्य पर विचार करते हुए, हम पूछते हैं, ''ज़्यों? मरियम में ऐसा ज़्या था?''

परमेश्वर अपने पुत्र की मां के रूप में मरियम को चुनने के लिए किसी तरह बाध्य नहीं था। वचन में कोई ऐसा संकेत नहीं है कि मरियम इतनी अच्छी और सिद्ध थी, जिस कारण परमेश्वर को उसे चुनना पड़ा। बल्कि हमें बताया गया है कि परमेश्वर ने उसे अपने अनुग्रह के कारण चुना था। स्वर्गदूत ने मरियम को इन शज़्दों से सलाम दिया, ''आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है!'' (लूका 1:28)। ''अनुग्रह'' यूनानी

शब्द के लिए इस शब्द से अनुवाद किया गया है, जिसे ''वह कृपा *जिसे कमाया न गया* हो'' कहा जाता है। फिर भी मरियम में परमेश्वर द्वारा चुने जाने के लिए कुछ विशेष बातें अवश्य हैं। इसलिए हम फिर पूछते हैं, ''उसमें वे क्या गुण थे?'' यह जानने के लिए कि ''परमेश्वर ने मरियम को क्यों चुना?'' हम इस पाठ में उसके जीवन की समीक्षा करेंगे।

पहले लूका 1:26 देखें। इस आयत का आरम्भ ''छठवें महीने में ...'' से होता है। यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की माता इलिशबा के गर्भवती होने का छठा महीना था। ''छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राइल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में ... भेजा गया।'' नासरत लबानोन पर्वत श्रृंखला की एक दक्षिणी ढलान पर, गलील सागर के पश्चिमी सिरे से पन्द्रह मील पश्चिम की ओर तथा भूमध्य से बाइस मील दूर एक छोटा सा गांव था।

स्वर्गदूत को, जिसके पास भेजा गया था, उस कुंवारी ''की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी'' (1:27क)। यूसुफ राजा दाऊद की संतान में से था, परन्तु शाही परिवार अब कठिन दौर में था। यूसुफ नासरत में रहने वाला (लूका 2:4) एक निर्धन[2] बढ़ई था (मत्ती 13:55)।

उस कुंवारी का नाम जिसके पास स्वर्गदूत को भेजा गया था, मरियम था (1:27ख)। ''मरियम'' इब्रानी नाम ''मिरियम'' का यूनानी रूप है।[3] यूसुफ की तरह वह भी राजा दाऊद की संतान में से थी,[4] और स्पष्टतया एक दीन परिवार से थी।[5] मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हुई थी (मत्ती 1:18)। उस जमाने में, अधिकतर मंगनियां बहुत छोटी उम्र में ही हो जाती थीं, सो हो सकता है कि जिब्राइल द्वारा दर्शन दिए जाने के समय मरियम नवयुवती (टीन-एजर) ही हो।[6]

जब परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की बात आती है, तो आस पास के हालात और परिस्थितियां कुछ अर्थ नहीं रखते। परमेश्वर किसी को भी किसी भी समय इस्तेमाल कर सकता है। यह पद इस बात की ओर भी ध्यान दिलाता है कि परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किए जाने के लिए बूढ़ा होने या झुर्रियां पड़ने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर का स्वर्गदूत ईश्वरीय योजना को पूरा करने के लिए उसकी सहायता लेने के लिए एक नवयुवती के पास, (जो लगभग 13 से 19 वर्ष के बीच की थी) आया।

वह अपने दिमाग का इस्तेमाल करने के लिए डरी नहीं

स्वर्गदूत ने मरियम से कहा, ''आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है'' (1:28)। स्वर्गदूत की बात से मरियम ''बहुत घबरा गई'' (1:29क)। बाइबल में अधिकतर लोग किसी स्वर्गीय आगंतुक से भेंट करके परेशान हो गए थे। परन्तु उसने आतन्कित होने के बजाय विचार किया कि ''यह किस प्रकार का अभिवादन है?'' (1:29ख)।

मरियम एक ऐसी स्त्री थी, जिसने अपने दिमाग का इस्तेमाल किया। हमें बताया गया है कि उसने यीशु के जन्म के समय की घटनाओं पर विचार किया (लूका 2:19)। वह परमेश्वर द्वारा दिए गए दिमाग का इस्तेमाल करने से नहीं घबराई।

वह एक भक्त स्त्री थी

''स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है'' (1:30)। मूल रूप से बिना भला हुए अपने ऊपर परमेश्वर के अनुग्रह को महसूस नहीं किया जा सकता। हम मरियम को एक ईमानदार, धार्मिक और उच्च नैतिक मूल्यों वाली स्त्री मान सकते हैं।

उसने परमेश्वर में और उसकी सामर्थ में विश्वास किया

स्वर्गदूत ने आगे कहा:

> और देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना [जिसका अर्थ है ''यहोवा उद्धार करता है'']। वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा (1:31-33)।

कलीसिया ही यीशु का राज्य है (मत्ती 16:18, 19)। ऊपर जाकर हमारा प्रभु दाऊद की गद्दी पर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया और अपने राज्य पर राज करने लगा (प्रेरितों 2:25-36)। स्वर्गदूत की बातों में इस सब का पूर्वाभास था।

परन्तु युवा मरियम की चिंता यह नहीं थी कि भविष्य में तीस से अधिक वर्षों बाद ज़्या होने वाला है। उसके कानों में गूंज रहे शब्द तो ये थे कि ''तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा।'' स्वर्गदूत से कहने लगी, ''यह ज़्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं'' (1:34)।

पहली नज़र में यह जकर्याह के अविश्वास जैसी प्रतिक्रिया लगती है, जिस कारण वह नौ महीने तक बोल नहीं पाया था (1:18, 20), परन्तु मरियम का प्रश्न यह नहीं था कि *ज़्या* सच में ऐसा ही होगा। बल्कि उसका प्रश्न यह था कि यह *कैसे* सम्भव होगा। हमारे इस पद में यह ज़ोर दिया गया है कि उसने स्वर्गदूत की बात पर *विश्वास किया* (1:45)।

स्वर्गदूत ने उसके ''कैसे'' के प्रश्न का जवाब दिया। उसने कहा, ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा'' (1:35)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''उतरेगा'' का इस्तेमाल तल्मूद को भरने के लिए परमेश्वर की उपस्थिति के बारे में बताने के लिए सप्तति अनुवाद में[7] किया गया है (देखें निर्गमन 40:35)।[8]

मरियम ने कोई चिह्न नहीं मांगा था, फिर भी स्वर्गदूत ने उसे चिह्न दे दिया: ''और देख, और तेरी कुटुम्बिनी[9] इलीशबा के भी बुढ़ापे में पुत्र होने वाला है, यह उसका, जो बांझ कहलाती थी छठवां महीना है'' (1:36)। उसने यह भी कहा, ''ज़्योंकि जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभाव रहित नहीं होता''[10] (1:37)। इसी बात पर मरियम को विश्वास करने के लिए कहा गया था और उसने विश्वास किया था (1:45)। यदि हम जीवन की चुनौतियों का सामना करना चाहते हैं तो हमें भी यह विश्वास करना होगा।

उसका मन दीन था

मरियम ने उज़र दिया, ''देख, मैं प्रभु की दासी हूं, मुझे तेरे वचन के अनुसार हो'' (1:38क)। यदि कोई आयत है, जो यह स्पष्ट बताती हो कि परमेश्वर ने मरियम को ज़्यों चुना, तो वह यही है। पहले तो वाज़्यांश ''प्रभु की दासी'' पर ध्यान दें। यूनानी शज़्द का अनुवाद ''दासी,'' ''दास'' का स्त्री लिंग रूप है। दासों में दासियों को सबसे तुच्छ माना जाता था और उनसे दुर्व्यव्यवहार किया जाता था। बाद में मरियम ने गाया, ''उस ने अपनी दासी की दीनता पर दृष्टि की है'' (1:48)।

वह परमेश्वर की इच्छा को मानने को तैयार थी

1:38 का दूसरा भाग देखें: ''मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।'' इसके सभी अर्थों पर विचार करें। (याद रखें कि मरियम एक विचार करने वाली स्त्री थी; उसने इसे सोच समझकर कहा।) वह एक जवान स्त्री थी, जिसका विवाह होने वाला था और जो अचानक गर्भवती हो गई थी। उसके होने वाले पति ने इसका दृढ़ता से विरोध किया था, ''नहीं, यह मेरा बच्चा नहीं है!''

हमारे लिए इस बात का अहसास करना कठिन है कि नासरत जैसे एक छोटे से कस्बे में मरियम की हालत कैसी होगी। लोगों के उसे, घूरने, कानाफूसी, अफवाहों और ताने मारने जैसी होने की कल्पना करें।[11] उसकी जान भी जा सकती थी, ज़्योंकि व्यवस्था में कहा गया था कि मंगनी हुई स्त्री जो व्यभिचार करती है, पथराव करके मार डाली जाए (व्यवस्थाविवरण 22:23, 24[12])। पुराने नियम में मृत्यु देकर दण्डनीय सभी पापों में से व्यभिचार का पाप गर्भवती होने पर छुपाया नहीं जा सकता था। उसके विरुद्ध दो या तीन गवाह ढूंढ़ने (व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15) में कोई समस्या नहीं होनी थी; मरियम के गर्भवती होने के छठे या सातवें महीने में उसके पास से जाने वाले लोग यह काम कर सकते थे।

बेशक मरियम इन सभी बातों को जानती थी। फिर भी उसने स्वर्गदूत से कहा, ''मुझे तेरे वचन के अनुसार हो।'' अन्य शज़्दों में, ''यदि परमेश्वर चाहता है कि ऐसा हो, तो मेरे साथ ऐसा ही होना चाहिए।'' वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करने को तैयार थी। परमेश्वर *ऐसे* ही लोगों को इस्तेमाल कर सकता है, चाहे वह मां हो, पिता, पुत्र या पुत्री हो।

''स्वर्गदूत उसके पास से चला'' जाने के बाद (1:38ख), ''मरियम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर को [अपनी रिश्तेदार इलिशबा से मिलने] गई'' (1:39)। इलिशबा उन कुछ लोगों में से एक हो सकती थी, जिन्होंने उसके साथ होने वाली बातों पर विश्वास करना था।

मरियम को देखते ही इलिशबा , तो वह ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई'' (1:41ख) ''और उसने बड़े शज़्द से पुकारकर कहा'' (1:42क): ''तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे पेट का फल धन्य है। और यह अनुग्रह मुझे कहां से हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई?'' (1:42ख, 43)।

उसे पवित्र शास्त्र का ज्ञान था

मरियम ने स्तुति के एक सुन्दर गीत से प्रतिक्रिया दी, जो आयत 46 से शुरू होकर आयत 55 तक मिलती है। अर्नेस्ट हाउज़र ने लिखा है कि यह संक्षिप्त, आनन्द से भरी कविता, ''नये नियम के साहित्यिक मोतियों में से एक है।''[13] इन दस आयतों में हमें यीशु की माता के कहे सबसे अधिक लिखित शब्द मिलते हैं।

मरियम के शब्द हमें 1 शमूएल 2:1-10 के हन्ना का गीत याद दिलाते हैं। मरियम के गीत के तीन मुख्य विषय हैं: (1) जो कुछ परमेश्वर ने उसके लिए किया था (1:46-49), (2) जो कुछ परमेश्वर ने सब लोगों के लिए किया है-उसने बेसहारों, दीनों और भूखों की सहायता की (1:50-53), और (3) जो कुछ परमेश्वर ने इस्राएल के लिए किया था (1:54, 55)। अन्तिम बात इस बात का प्रमाण थी कि परमेश्वर अपना वचन सदैव पूरा करता है!

मरियम की बातों पर विचार करते हुए, हम इस तथ्य से प्रभावित होते हैं कि उसे पवित्र शास्त्र का काफ़ी ज्ञान था।[14] पुराने नियम के बारह पद स्तुति की उसकी बातों में झलकते हैं। यह तथ्य उस समय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, जब आराधनालय के स्कूलों में केवल लड़कों को ही पढ़ने की अनुमति थी।

हमें मरियम के जीवन को देखकर अपनी चाल और तेज़ करनी चाहिए। लूका 2 अध्याय में यीशु के जन्म तथा चरवाहों के आने की कहानी है। आयत 19 कहती है कि ''मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही।''

वह बहादुर और साहसी स्त्री थी

यीशु के जन्म के लगभग चालीस दिन बाद, मरियम और यूसुफ बलिदान भेंट करने के लिए बालक यीशु को यरूशलेम के मंदिर में लेकर गए (लैव्यव्यवस्था 12:2-4, 6-8)। वहां शमौन नाम का एक आदमी था, जिसने यीशु को अपनी बाहों में लेकर कहा था कि यह बालक क्या करेगा (लूका 2:25-35)। परमेश्वर की प्रेरणा से कही गई उसकी बातों में मरियम को यह अशुभ चेतावनी भी थी: ''बरन तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा ...'' (लूका 2:35)।

ज़रा रुककर विचार करें कि मरियम किस बात की प्रतीक्षा कर रही थी। मेरी पत्नी और मेरे लिए तीन बच्चियों का पालन-पोषण करना आसान काम नहीं था। परन्तु मरियम के कम से कम *सात* बच्चे थे[15] और उन सब में बड़ा परमेश्वर का पुत्र था! मैं परमेश्वर के अपने पुत्र के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी के तनाव की कल्पना भी नहीं कर सकता। अब, इससे भी ऊपर शमौन ने उसे यह बता दिया था कि अन्त में तलवार उसके प्राण को छेद देगी। उसके मन की पीड़ा तो आगे आने वाली थी!

कोई साहसी स्त्री ही इन चुनौतियों का डटकर सामना कर सकती थी। ऐसे समय में जब किसी ने सुना भी नहीं होगा, एक अविवाहित मां बनने के परिणामों को स्वीकार करने की इच्छा जताकर मरियम ने अपना साहस दिखा दिया था। वह हमारे प्रभु की माता बनने के परिणामों को स्वीकार करके अपना साहस दिखाती ही रही।

इस सच्चाई से हमें यह समझाने में सहायता मिल सकती है कि परमेश्वर ने एक महल में पलने वाली राजकुमारी के बजाय एक निर्धन, पिछड़े से, बल्कि तुच्छ समझे जाने वाले कस्बे में से इस अज्ञात युवती को ही ज़्यों चुना। परमेश्वर को ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो दृढ़ इरादे वाला और लचीला हो। अमेरिका में हम कहेंगे, ''परमेश्वर को किसी व्यक्ति की आवश्यकता थी''।[16]

यीशु की निजी सेवकाई के समय यूसुफ के बारे में कहीं भी कुछ पढ़ने को नहीं मिलता; केवल मरियम और उसके बच्चों के बारे में ही पढ़ते हैं। बहुत से लोगों का विचार है कि इससे यह संकेत मिलता है कि यूसुफ मरियम से बड़ी उम्र का था और यीशु के सार्वजनिक कार्य आरम्भ करने से पहले उसकी मृत्यु हो चुकी था।[17] इस बात की काफ़ी सम्भावना है कि अपने सात या अधिक बच्चों का पालन-पोषण करने की ज़िम्मेदारी मरियम पर ही थी।[18] जैसा आप में से कई लोग मानेंगे कि यह आसान नहीं है। मैं दोहराता हूं कि परमेश्वर को किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो दृढ़ हो!

वह अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार करने को तैयार थी

मरियम की दृढ़ता उसके विशेष गुण से जुड़ी हुई है, जो एक ऐसी विशेषता है जिसकी बहुत से लोगों में कमी पाई जाती है। वह ज़िम्मेदारी लेने को तैयार थी। इसे समझाने के लिए हम यीशु की बारह वर्ष की आयु के समय की कहानी का वर्णन करते हैं (लूका 2:41-51)। जब यूसुफ और मरियम जाने पर उसे नहीं ढूंढ़ पाए, तो उन्होंने उसे यरूशलेम में जाकर जगह-जगह ढूंढ़ा आखिर परमेश्वर ने उन्हें उसकी देखभाल करने की जिम्मेदारी जो दे दी थी। दुर्भाग्य से कुछ लोग आज जिम्मेदारी को मानना नहीं चाहते, चाहे यह उनके निजी जीवन में हो, विवाह में या परिवार में हो।

उसने अपने पुत्र में भरोसा जताया

अठारह वर्ष बाद हम यीशु के अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ करने पर आते हैं। उसकी सेवकाई के आरम्भ में मरियम और उसका पुत्र काना में एक विवाह समारोह में थे। दाखरस खत्म हो जाने पर मरियम ने यीशु से कहा, ''उनके पास दाखरस नहीं रहा'' (यूहन्ना 2:3)।[19] फिर उसने सेवकों से कहा, ''जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना'' (यूहन्ना 2:5)। उसे यकीन था कि उसका पुत्र हालात पर काबू पा सकता है।

उसने एक ऐसा गुण दिखाया, जो हर माता-पिता के लिए आवश्यक है: उसे अपनी सन्तान पर भरोसा था और उसने वह भरोसा दिखाया। मेरी मां द्वारा दिए गए सबसे अच्छे उपहारों में से मुझे निरन्तर यह उत्साह देना था, ''तुम कर सकते हो।''

उसे दूसरों की भलाई का ध्यान था

अगले तीन से अधिक वर्षों के दौरान हम मरियम के बारे में तभी पढ़ते हैं, जब लगा कि उसे यीशु के खोने की चिन्ता थी (मरकुस 3:20, 21)। वह और उसके दूसरे बच्चे उसे

घर ले जाने के लिए आए (मरकुस 3:31-35)।[20] यह घटना मरियम और उसके परिवार की चापलूसी नहीं करती; वे स्पष्टतया पूरी तरह नहीं समझते थे कि यीशु कौन है और उसका उद्देश्य ज़्या है। फिर भी इससे यह पता चलता है कि मरियम को अपने पुत्र की चिन्ता थी। यदि आपकी ऐसी मां है, जो आपकी चिंता करती है तो मुझे आशा है कि आप ध्यान रखने वाली मां के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

वह अन्त तक अपने काम के प्रति वफ़ादार थी

इसके बाद मरियम क्रूस से हमें दिखाई नहीं देती। यूहन्ना ने इस मार्मिक दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है:

> परन्तु यीशु के क्रूस के पास उस की माता और उस की माता की बहिन [क्लोपास की पत्नी] मगदलीनी खड़ी थी। यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिस से वह प्रेम रखता था [सम्भवतया यूहन्ना], पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा; हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है। तब उस चेले से कहा, यह तेरी माता है ... (यूहन्ना 19:25-27)।

ज़्या आप मरियम को वहां खड़े, होकर अपने पुत्र को क्रूस पर चढ़ा देखने की कल्पना कर सकते हैं? ज़्या आप उसकी आंखों से टपकते आंसुओं को देख सकते हैं? ज़्या आप उसे उसके बचपन को याद करते हुए अपनी बाहों का झूला बनाते हुए देख सकते हैं? कई वर्ष पहले मैंने एक कविता याद की थी, जो मुझे इस घटना को याद दिलाती है:

> मैंने दो स्त्रियों को पहाड़ी से नीचे आते हुए
> रोते हुए सुना;
> एक टूटे हुए गुलाब की तरह थी,
> और एक चिंगारी की तरह।
> एक कहती थी, ''लोगों को इस काम के लिए पछताना पड़ेगा
> उनके दुष्ट हाथों ने यह कार्य किया है'';
> दूसरी ने अपने आंसुओं की ज़बान से इतना ही कहा,
> ''मेरा बेटा, मेरा बेटा, मेरा बेटा''।[21]

गुलगुता नामक पहाड़ी पर, मरियम को आखिर वर्षों पहले कही गई बात समझ आ गई थी: ''बरन तेरा प्राण भी तलवार से वार पार छिद जाएगा'' (लूका 2:35क)। बोर करने वाला होने का जोखिम उठाकर, मैं एक बार फिर अवश्य कहूंगा कि परमेश्वर को ऐसे ही व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो दृढ़ हो।

एक अन्तिम दृश्य रह जाता है: यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने तथा जी उठने के बाद चेले आत्मा के आने और राज्य/कलीसिया के घोषित होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लूका ने लिखा

है कि चेलों के साथ मरियम और यीशु के भाई भी थे (प्रेरितों 1:14)। यीशु के भाई भी विश्वास करने लगे थे; मरियम के विश्वास के कारण वे भी समझ गए थे।

यहां हमें मरियम को छोड़ देना होगा। बाइबल से बाहर की एक परज़्परा कहती है कि वह यरूशलेम में मर गई; एक और परज़्परा के अनुसार इफिसुस में चली गई और वहां मर गई। हम नहीं जानते कि उसके साथ ज़्या हुआ। परमेश्वर ही हमें बताता है कि वह कलीसिया के रोमांचकारी प्रारज़्भिक दिनों में एक भाग थी और उसके साथ उसने हमारे प्रभु की माता की कहानी पर से पर्दा खींच लिया।

सारांश

परमेश्वर ने मरियम को ही ज़्यों चुना? हमने कई विशेषताएं बताई हैं, जो निश्चित तौर पर मरियम को लगभग असज़्भावित कार्य को करने के लिए जो परमेश्वर ने उसे दिया, सहायता की:

- वह अपने दिमाग का इस्तेमाल करने के लिए डरी नहीं।
- वह एक भज़्त स्त्री थी।
- उसने परमेश्वर में और उसकी सामर्थ में विश्वास किया।
- उसका मन दीन था।
- वह परमेश्वर की इच्छा को मानने के लिए तैयार थी।
- उसे पवित्र शास्त्र का ज्ञान था।
- वह बहादुर और साहसी स्त्री थी।
- वह अपनी ज़िज़्मेदारी स्वीकार करने को तैयार थी।
- उसने अपने पुत्र में भरोसा जताया।
- उसे दूसरों की भलाई का ध्यान थी।
- वह अन्त तक अपने काम के प्रति, वफ़ादार थी।

जीवन के कार्य में आगे बढ़ने के लिए किसी के लिए भी इन विशेषताओं से सहायता मिलेगी। इससे भी महत्वपूर्ण यह कि इनसे परमेश्वर की सेवा के लिए इस्तेमाल किए जाने की योग्यता मिलेगी।

अन्त में, मैं आपको मरियम के विशेष गुणों की ओर ले जाना चाहता हूं: ''वह परमेश्वर की इच्छा को मानने को तैयार थी।'' स्वर्गदूत को कहे उसके शज़्दों पर फिर से विचार करें: ''मुझे तेरे वचन के अनुसार हो'' (लूका 1:38ख)। मरियम के जवाब पर कैनगायर ने ये टिप्पणियां की हैं:

> ... उसका निर्णय तुरन्त था और उसकी आज्ञाकारिता सज़्पूर्ण। वह परमेश्वर को समर्पित थी। चाहे कितने भी सवाल खड़े हो जाते। या भौंहें तनतीं। जो भी कीमत

चुकानी पड़ती। या जो भी परिणाम होता। चाहे इससे उसकी प्रतिष्ठा चली जाती। या वह आदमी ही जिससे वह प्रेम करती थी।

चाहे उसका अपना प्राण चला जाता।

... इस युवती के सभी अच्छे गुणों में से शायद ''चाहे जो भी हो जाए'' वाले गुण ने [यीशु के] पालन पोषण के काम के लिए उसे सबसे योग्य बना दिया... ।[22]

ज़्या *आप* अपने प्रभु की आज्ञा मानने को तैयार हैं,[23] चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े, चाहे जो भी परिणाम हों? यदि हां, तो आप भी, वह व्यक्ति होंगे, जिसे परमेश्वर अपने उद्देश्य के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

टिप्पणियां

[1]स्नूपी चार्ली ब्राउन के कुत्ते का नाम है। कॉमिकों में, कई बार कार्टून पशुओं को अपने विचार शब्दों में व्यक्त करते दिखाया जाता है। [2]यूसुफ और मरियम के निर्धन होने का पता इस बात से भी चलता है कि जो बलिदान उन्होंने भेंट किया वह निर्धन लोगों के लिए था (लूका 2:24 की तुलना लैव्यव्यवस्था 12:6-8 से करें)। जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे सही था जब उसने लिखा, ''यदि यूसुफ और मरियम में निरन्तर और कीमती बलिदान देने की क्षमता होती, तो बालक की महानता जानने के बाद वे इतना छोटा बलिदान न देते'' (जे. डब्ल्यू मैज़र्वे और फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* [सिंसनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914], 34)। यीशु की जीवन शैली (मत्ती 8:20) से भी विनम्र आरम्भ का पता चलता है। [3]''मिरियम'' का अर्थ है ''कड़वा।'' रूत 1:20 में शब्द का यही रूप इस्तेमाल किया गया है। पुराने नियम में मिरियम (हिन्दी में मरियम) केवल एक ही बार मिलता है (मूसा की बहन) परन्तु नये नियम में बहुत सी मरियमे हैं। [4]बाइबल का हमारा यह पाठ यह ज़ोर देता है कि मसीह दाऊद की सन्तान था (1:32, 69)। परमेश्वर ने दाऊद से कहा था कि मसीहा उसके ''निज वंश'' से होगा (2 शमूएल 7:12)। मूलत: परमेश्वर ने कहा कि मसीहा ''[दाऊद की] अन्तड़ियों से निकलेगा'' (हिन्दी बाइबल में 2 शमूएल 7:12 के नीचे टिप्पणी देखें-अनुवादक)। NIV में ''तेरी देह में से निकलेगा'' है। ज़्योंकि यीशु यूसुफ के द्वारा दाऊद की शारीरिक सन्तान नहीं था, इसलिए इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए उसका मरियम के द्वारा शारीरिक सन्तान होना आवश्यक था। [5]टिप्पणी 2 पर विचार करें। [6]अक्सर नवयुवतियां तरुणावस्था में ही होती थीं। दूसरी ओर, यूसुफ पक्की उम्र का हो सकता है। यूसुफ का उल्लेख यीशु की अपनी सेवकाई के दौरान कहीं नहीं हुआ, जो इस सम्भावना का संकेत देता है कि यीशु के तीस वर्ष का होने से पहले उसकी मृत्यु हो गई थी। [7]सप्तति पुराने नियम के यूनानी अनुवाद को कहा जाता है। ''संसार जिसमें मसीह आया'' पाठ देखें। [8]कई बार, यूनानी मिथ्या और यीशु के कुंवारी से जन्म में समानता बनाई जाती है। मानवीय जीवों के साथ यूनानी देवताओं के शारीरिक सम्बन्धों के अशिष्ट वृत्तांतों से स्वर्गदूत के भद्र शब्दों की सुन्दरता की तुलना नहीं की जा सकती। [9]KJV में ''cousin'' है जो एक मान्य अनुवाद है; परन्तु उस जमाने में ''cousin'' (चचेरा/मौसेरा या भाई/बहन) से पता नहीं चलता था कि सम्बन्ध कितना निकट है। मरियम और इलिश्बा हो सकता है ''रिश्तेदार की रिश्तेदार'' या ''आगे उनकी रिश्तेदार'' या ''उनके रिश्तेदारों की रिश्तेदार'' हों। [10]यूनानी शास्त्र में मूलत: ''ज़्योंकि परमेश्वर के लिए कोई बात असम्भव नहीं'' है। इसलिए ASV में इस आयत का अनुवाद ''ज़्योंकि परमेश्वर की कोई बात व्यर्थ नहीं होती'' है।

[11]कुछ लोगों को लगता है कि यूहन्ना 8:41 का संकेत है कि ''हम ते व्यभिचार की सन्तान नहीं हैं- पर *तुम* हो।'' [12]लैव्यव्यवस्था 20:10; यहेजकेल 16:38; यूहन्ना 8:5 भी देखें। [13]अर्नेस्ट ओ. हाउज़र,

''मेरी, मदर ऑफ़ क्राइस्ट,'' *रीडर'स डाइजेस्ट,* (दिसम्बर 1971): 170. [14]मैं इस सम्भावना को निकाल नहीं रहा हूं कि इलिशबा (1:41) और बाद में जकर्याह की तरह (1:67) मरियम ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई'' थी। मेरा मानना है कि मरियम की बातों से वचन के उसके व्यक्तिगत ज्ञान का संकेत मिलता है। [15]मरियम के कम से कम चार और पुत्र और दो पुत्रियां थीं (यूसुफ से) (मरकुस 6:3)। यदि उसकी लड़कियां भी लड़कों जितनी थी, तो उसके *दस* बच्चे थे। [16]जहां *आप* रहते हैं वहां सामर्थ और लचीलेपन की अवधारणा को बताने वाली अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करें। [17]यह तथ्य कि यीशु ने अपनी माता को देखभाल के लिए उसे यूहन्ना को सौंप दिया (यूहन्ना 19:26, 27) यह भी संकेत देता है कि यूसुफ अब तक मर चुका था। [18]मैं ''अधिकतर पालन पोषण'' की बात कर रहा हूं, न कि ''पूरे की,'' क्योंकि, पहलौठा होने के कारण, यीशु को अपने पिता की मृत्यु के बाद कुछ जिम्मेदारी दी गई होगी। तो भी जीवित माता-पिता के रूप में मरियम का बोझ काफी होगा। [19]मरियम और यूसुफ की बाकी बातचीत के कुछ पहलुओं पर ''सब बातों का पहली बार'' पाठ में चर्चा की जाएगी। [20]हम यह बात यकीन से नहीं कह सकते कि आयत 31 का आयत 20 से कोई सम्बन्ध है, परन्तु, काफ़ी सम्भावना है कि इनका आपस में सम्बन्ध है।

[21]लेखक अज्ञात। [22]कैन गायर, *मोमैन्ट्स विद द सेवियर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1998), 26-27. [23]इस प्रवचन का इस्तेमाल करते हुए आपको चाहिए कि अपने सुनने वालों को बताएं कि उद्धार पाने के लिए उन्हें क्या करना आवश्यक है: यदि वे अभी मसीही नहीं हैं, तो उन्हें मन फिराव, अंगीकार, और बपतिस्मे के द्वारा यीशु में अपने विश्वास को व्यक्त करना आवश्यक है (प्रेरितों 2:37, 38; 8:35-39; 22:16)। यदि वे अविश्वासी मसीही हैं, तो उन्हें मन फिराकर, गलती को मानकर और प्रार्थना करके प्रभु के और उसकी कलीसिया के पास वापस आना चाहिए (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16)।

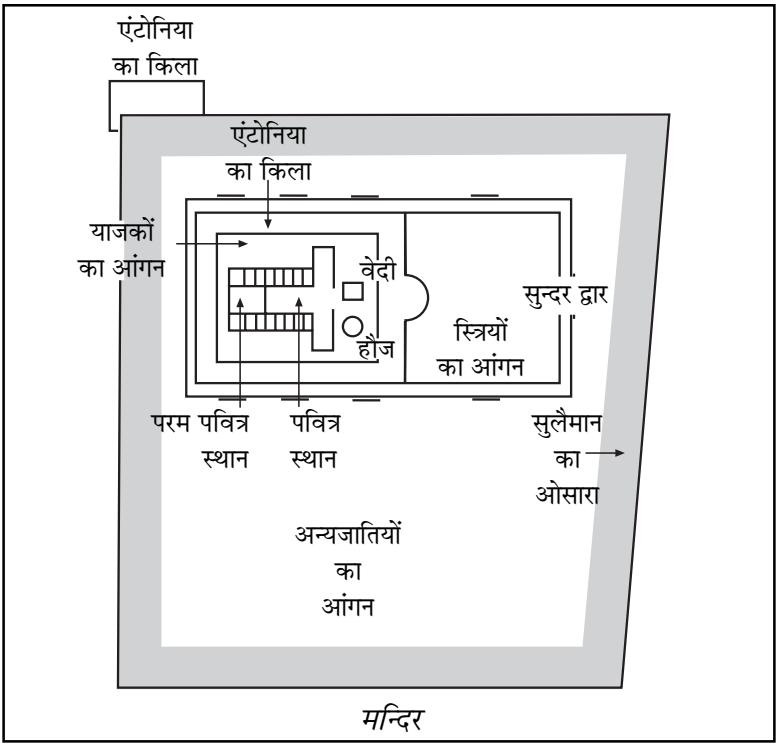

मन्दिर